सिद्धांत
3

प्रशिक्षण के सिद्धांत

पूरे विश्व में पाँच सिद्धांतों की छोटी पुस्तक

सिद्धांतः- ज्ञान और संस्कृति को समझना

सिद्धांतः- ज्ञान और संस्कृति को समझना

पूरे विश्व में पाँच सिद्धांतों की छोटी पुस्तक

सिद्धांत : ज्ञान और संस्कृति को समझना

परिशिक्षण देने वालों के लिए टिप्पणी

यह भाग इस प्रकार से बनाया गया है कि ज्ञान प्राप्त करने व सेवा के संदर्भ में बुद्धिमानी से प्रयोग करने पर बल/दबाव डाले। साधारण शब्दों में कहें तो, ज्ञान मात्र जानना है, बुद्धि ज्ञान लेने व उसको जीवन व सेवा में प्रयोग करने की योग्यता है इस भाग को तीन भागों में विभाजित किया गया है। पहला भाग ज्ञान व बुद्धि के महत्व पर एक नजर है। दूसरा भाग बुद्धि ग्रहण/प्राप्त करने के मार्गों पर जोर देना है। तीसरा आखिरी भाग मदद करता है किसी निर्दिष्ट ज्ञान को पाने, व जो हम करते हैं उस पर ज्ञान का प्रभाव प्राप्त करने में। (बुद्धि)

एक नजर विषय सूची की तालिका

I. ज्ञान प्राप्त करते हुए बुद्धि प्राप्त करना

II. ज्ञान आप किस जगह सेवा करते है: अपनी संस्कृति को जानते हुए

III. बुद्धि: अपनी संस्कृति में प्रभावी रूप में सेवा करना

कुंजी (अपने उपलब्ध समय के अनुसार इस्तेमान करें)

आ.दि.: आधा दिन (यदि आपके पास 50-54 मिनट हो)

पू.दि.: पूरा दिन (यदि आपके पास 75-84 मिनट हो)

भाग 1

ज्ञान प्राप्त करना और बुद्धि लाभ प्राप्त करना

ज्ञान और जानना

"सदियों से मसीह धर्म विज्ञान का केंद्रीय विषय यही है कि मनुष्य पूरी रीति से प्रकृति व परमेश्वर के उद्देश्य को समझ पाएं।" जे.आई. पैकर!

परिचय

हम वो लोग है जो जानकारी के साथ रहना पसंद करते हैं। कुछ लोग ज्ञान को सामर्थ के साथ तुलना करते हैं। हम जानना चाहते हैं, हम में से बहुत से लोग प्रश्न पूछते हैं, दूसरे प्रश्नों से कुछ ज्यादा प्रश्न ज्ञान के विषय में होते हैं। हम यह जवानों में देख सकते हैं जो प्रश्नों को पूछने से घबराते नहीं हैं कुछ प्रश्नों के उदाहरण जो बच्चे व जवान पूछते हैं।

बच्चे

- क्या हव्वा के पेट में कोई बटन था?
- यदि मच्छर को परमेश्वर ने बनाया है तो हम उन्हें क्यों मारते हैं?
- परमेश्वर कैसे प्रत्येक प्रार्थना तुरन्त सुन सकते हैं।
- क्या परमेश्वर एक लड़का या लड़की है।
- परमेश्वर क्यों आकाश (बादल) को मंडराता है?

जवान

- क्या मेरी मानसिक रूप से विकलांग बहन स्वर्ग जाएगी?
- क्या यहां कोई जन है जिसे परमेश्वर ने चुन कर रखा है कि मैं उस से विवाह करूँ? अगर है तो मैं क्या करूं, यदि मैं उस व्यक्ति के साथ विवाह का अवसर को खो दूं? या क्या और कुछ लोग जो मेरे साथ इस स्पर्धा में होंगे?
- मैं कैसे अपने गैर मसीह माता-पिता की इच्छाओं का आदर करता हूँ और क्या तब भी परमेश्वर की इच्छा का अनुसरण करूंगा?
- अच्छे लोग क्यों दुख/तकलीफ उठाते हैं?

अंजान को जानने का अनुसरण करना ही ज्ञान है।

आप को जानने के लिए मुझे आप के साथ समय बीताना पड़ेगा। कुछ जानने के लिए, आप को उस क्षेत्र में समय बीताना पड़ेगा। "साथ में समय" हम ज्ञान को कैसे निर्धारित करते हैं।

प्रश्न अपने दर्शकों से यह प्रश्न पूछिएः-

1. जानने का मतलब क्या होता है?
2. कैसे कोई व्यक्ति जानकारी को इकट्ठा करता है?
3. हम कुछ चीज या किसी को कैसे जानते हैं?
4. एक प्रकार के जानने में दूसरे प्रकार के जानने में क्या भिन्न्ता है?
5. आत्मिकता में ज्ञान क्या भूमिका निभाता है? और कैसे दोनों एक दूसरे के साथ संबंधित है?

संभवतः आप 3-5 के समूह में बंटना चाहें, और इस पर चर्चा करना चाहते हैं। समूह में 3-5 मिनट के पश्चात, आप एक या दो समूह को बुला सकते हैं आप को सभी प्रश्नों का उत्तर बताने के लिए।

वचन में देखना

आइए एक निगाह डालते हैं वचन ज्ञान के विषय क्या कहता है?

3 मिनट 2 पतरस 1:1-8 “शमौन पतरस की ओर से, जो यीशु मसीह का दास और प्रेरित है, उन लोगों के नाम जिन्होंने हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की धार्मिकता द्वारा हमारे समान बहुमूल्य विश्वास प्राप्त किया है, परमेश्वर की और हमारे प्रभु यीशु की पहचान के द्वारा अनुग्रह और शांति तुम में बहुतायत से बढती जाए, क्योंकि उसकी ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ पहचान के द्वारा दिया है, जिनके द्वारा उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी है ताकि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छुटकर, जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ; इसी करण तुम सब प्रकार का यत्न करके अपने विश्वास पर सदगुण, सदगुण पर समझ, और समझ पर संयम और संयम पर धीरज और धीरज पर भक्ति और भक्ति पर भाईचारे की प्रति और भाई चारे की प्रति पर प्रेम बढाते जाओ, क्योकि यदि ये बातें तुम में वर्तमान रहे और बढती जाए, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह को पहचान में निकम्में और निष्फल न होने देंगी,,।

चिंतन

6 मिनट

ज्ञान परमेश्वर द्वारा दिया गया है ताकि हम उसे जान सकें, ज्ञान हमेशा सब के लाभ के लिए दिया जाता है किसी एक के व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं। ज्ञान का केन्द्र बिन्दु है कि हमारा यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर पिता के साथ संबंध में निर्देशन करें। जैसे 2 पतरस के यह पद दर्शाते हैं जो हमारा निर्देशन करता है वही ज्ञान है।

ज्ञान, शब्दकोश के अनुसार, ऐसे भी वर्णित किया जा सकता है जैसे “सच्चाईया” जानकारी एक व्यक्ति के द्वारा शिक्षा व अनुभव द्वारा प्राप्त की गई बुद्धि।

परिचित होने के लिए, साथ में परिवारिक होने के लिए, किसी के साथ अनुभव के लिए, सच्चाई या सत्य तथ्यों के प्रति जागरूक होने के लिए, किसी के साथ प्रयोगात्मक समझदारी के लिए,,

ज्ञानः- जानना कि क्या करें। आप क्या जानते हैं

बाइबल ज्ञान परीक्षा

देखें सम्मिलित पारस्परिक प्रक्रिया हाथों के लिए दिए गए पृष्ठों के भाग में, इस अध्याय के अन्त उत्तर भी दिये गये है। प्रत्येक को कुछ मिनट दें, और फिर सही उत्तर कि ओर चले और सब को देखने दी उन्होंने कैसा किया था।

बुद्धि पर चिन्तन

6 मिनट

पहला कदम जानना है..... बाइबल की संस्कृति को जानना दूसरा कदम अमल करना है..... अमल करना जो कुछ भी सीखा है बुद्धि की ऐसे व्याख्या कर सकते हैं जैसेः जब आप कुछ जानते है तो वह आपके व्यवहार करने पर प्रभाव डालता है। ज्ञान समान्यतः अध्ययन की किसी डिग्री व उसकी उपयोगिता की ओर संकेत करता है और सत्य का बोध कराता है बुद्धि को ऐसे वर्णन किया जा सकता है, कि कैसे ज्ञान को अभ्यास रूप में लाया जायें। शब्दकोश बुद्धि की ऐसे व्याख्या करता है "अनुभवी होने का गुण, ज्ञान और अच्छा न्याय संगत, किसी कार्य व निर्णय की मजबूती को आदर सहित अमल में लाने का ज्ञान,, वो करना जो आप जानते है कि यह करने में ठीक/सही है।

अय्यूब 28:12 "परन्तु बुद्धि कहां मिल सकती है और समझ का स्थान कहां है?"

नीति वचन की पुस्तक का दुरूपयोग करना आसान है, विशेष तौर से तब जब इस संदर्भ पर आयतें लेते हैं, ऐसा करने में जो समस्या आती है उसे देखने के लिए तुलना करें नीति वचन 26:4,5 "मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर न देना, ऐसा न हो कि तू भी उसी के तुल्य ठहरे, मूढ को उसकी मूढता के अनुसार उत्तर देना, ऐसा न हो, कि वह अपने लेखे में बुद्धिमान ठहरे"।

नीति वचन, परमेश्वर के सभी वचनों के समान है, इसका उद्देश्य ही हमें चुनौती देना है, हमें संवारना है, हमें परिवर्तित करना है। परमेश्वर ने हमें बाइबल इसलिए नही दी कि हम उसके विषय सोचते रहे, परन्तु हमें शिक्षा देने के लिए कि हम कैसे सोचे। हम बाइबल के साथ सबसे अच्छा पारस्परिक व्यवहार तभी करते है जब परमेश्वर के वचन में पायी जाने वाली बुद्धि हम में भरती है तथा हमारे भीतर लिए जाने वाले निर्णयो को प्रभावित कर बाहर निकालती है। यह हमेशा ही लाभकारी नही होता, कि कच्चे सोने रूपी बुद्धि को निकाला जायें और अमल किया जाए एक परस्थिति या संदर्भ पर बिना पूरी तस्वीर को देखे हुए।

उदाहरण (शायद सभी संदर्भो पर कार्य न करें)

मोटरकार बनाने वाला हेनरी फोर्ड ने बिजली के प्रतिभावान चार्ली स्टेन मेटज से अपनी फैक्ट्री के लिए जनरेटर बनाने के लिए कहा था। एक जनरेटर चलते-चलते रूक गया और उसको ठीक करने वाले मिस्त्री उसके रूकने के कारण को खोज न सकें तो फोर्ड ने स्टेनमेटज को बुलाया, जिन्होने मशीन के साथ मरम्मत कर कुछ घंटे बिताये थे, उन्होने उस जनरेटर के स्विच को निकालकर फेंक दिया और नया स्विच लगा दिया, नया स्विच को लगाते ही जनरेटर पुन स्टार्ट हो गया।

लेकिन फोर्ड को स्टेनमेटज के द्वारा भेजा गया $10000 का बिल मिला। दब्बू व कंजूस कार बनाने वाले ने पूछताछ की कि इतना ज्यादा बिल क्यों बनाया स्टेनमेटज ने उत्तर दिया "$10 जेनरेटर के बारे में सोचने के लिए, $9990 जनरेटर के बारे में कहाँ सोचने के लिए" फोर्ड ने तुरन्त बिल का भुगतान कर दिया (टूडे इन दा वर्ल्ड, एम.बी.आई., अप्रैल 1990, P.27)

3 मिनट

आलौकिक/दैवीय ज्ञान

बुद्धि का शब्द प्राथमिकता के साथ पुराने नियम में मनुष्य के जो पृथ्वी पर रहते हैं के अपने रचियता के साथ अध्यात्मिक संबंध बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है। बुद्धि परमेश्वर के स्वभाव का केन्द्रीय भाग बनाती है जैसा कि रचना क्रम में प्रभावित है। दोबारा, ज्ञान दर्शाता है कोई एक कुछ जानता है बुद्धि ज्ञान के प्रयोग को दर्शाती है। बुद्धि अध्यात्मिक जुड़ाव में सबसे ऊपर है, यह एक आभास है जो परमेश्वर में बसा हुआ है पाया जाता है, जो रचना पर प्रकाश डालता है, यह हमारे तर्क संगत विचार करने की योग्यता का एक भाग है।

रचना में बुद्धि प्रकट होती है, जो हमारी आदिकालीन/प्राचीन अव्यवस्था को बाहर निकालती है, मनुष्य को बनाने में परमेश्वर की बुद्धि प्रगट है, मतलब मनुष्य का जीवन भी तरतीब में चिन्हीत हो, और इसका अर्थ रचे गये संसार में भी जीवन हो/पाया जायें। जो कई अध्यात्मिक ज्ञान चिन्हों को धारण करती है। (वाल्टर ए.एलवेल, इन लूयूमिना, केरल स्ट्रीम, आई.एल. टेनडेल हाउस 2005)

परमेश्वर की बुद्धि को सृष्टि/प्रकृति की रचना में भी देखा जा सकता है और यह परमेश्वर की बुद्धि मात्र नहीं है, हमारी सामर्थ हो कि बुद्धिमान लोगों को मानवता की रचना में लगाया जायें। हम में समझने की चुनने की, निर्णय लेने की योग्यता है जैसे मनुष्य को रचा गया है व उसको आजादी दी गई है। परमेश्वर के द्वारा दी गई क्षमता है, और बुद्धि के लिए अध्यात्मिक शक्तियाँ। मनुष्य कि बुद्धि को समझना मुश्किल/असंम्भव है, बिना पहले उस बुद्धि के स्रोत को जाने। सब सत्य परमेश्वर के सत्य है, हम में वो योग्यता है कि सृष्टि की हर चीज का उपयोग परमेश्वर की अराधना के लिए करते है और जवानों व दूसरों को भी परमेश्वर की ओर ले जाने के लिए भी। रोबबेल जो कि मार्स हिल चर्च ग्रेडं रेपिड के एक वक्ता व पासवान है मिशिगन में कहा "हम वो लोग नही जो परमेश्वर को अपने जवानी के

लिए लाते है, परन्तु हम जवानों को परमेश्वर की ओर संकेत करते है जो कि पहले से ही वहां उपस्थिति है"।

बुद्धि वो योग्यता है जिस को ज्ञान के लिए प्रयोग किया जाता है अनुभव के द्वारा, शिक्षा, वचन/शास्त्र, परम्परा, और इस्तेमाल करने पर जो हम जानते है, निर्णय करने व उस ज्ञान पर कार्य करने, बुद्धि सत्य व अनुभवों को संचय करने से अधिक है, यह वो योग्यता है जो एक कार्य के क्रम को बदल देती है और कुछ सत्यों और अनुभवों पर कार्य करती है यह स्पष्ट तौर बौध कराती है व कार्य करती है।

FULL DAY
4 मिनट

आगे अध्ययन के लिएः- नीति वचन द्वारा बुद्धि के लिए प्रार्थना करना यह जानते हुए कैसे बुद्धि के लिए प्रार्थना करें यह भजन संहिता एवं नीति वचन में प्रमाणित है। पृष्ठ संलग्न है, नीति वचन में बुद्धि (छात्रों के लिए पृष्ठों/भाग में पाया जा सकता है) यह एक पुस्तक है जो कि बताती है कि नीतिवचन का उद्देश्य बुद्धि प्राप्ति है। प्रत्येक नीति वचन में जाने से पहले प्रार्थना के लिए समय निकाले। एक अभ्यास जो कि आप कर सकते है कि विद्यार्थी पृष्ठों को अपने घर ले जाए और आयतों के द्वारा प्रार्थना करे परमेश्वर से बुद्धि मांगते हुए।

भाग 2

यह ज्ञान कि आप कहां सेवा करते है: अपनी संस्कृति को जानना

शिक्षा... **शिक्षाः** हम बुद्धि कैसे प्राप्त कर सकते है

4 मिनट

उनके समान जो मसीह के लिए दूसरों के जीवन पर प्रभाव डालना सीख लेते हैं, अवश्य है कि हम ऐसे अगुवे हो जिनके पास ज्ञान हो, फिर भी हमें ज्ञान नही ढूढना जैसे आदव व हव्वा ने भले व बुरे के ज्ञान के वृक्ष से फल खाकर ढूंढा था (उत्पत्ति 2) हमारी इच्छा है कि ज्ञान से पूरी तरह भर जाये, न कि फूल जाये, ब्लकि दूसरों के जीवन को प्रभावित करने के लिए तैयार हो जाए। यह हमारी प्रार्थना है कि "बुद्धि तेरे ह्दय में प्रवेश करेगी, और ज्ञान तुझे मन माऊ लगेगा,, (नीति वचन 2:10)।

दो प्रकार का ज्ञान

A. परमेश्वर का वचन

भोजन का समयः कोई भी भोजन को खोना नही चाहता। अगर हम चाहे तो हम लगातार समय पर भोजन का आनन्द ले सकते है। कुछ संस्कृतियों में, यह सुबह का नाश्ता है, दोपहर का भोजन, और रात्रि का भोजन। कभी-कभी जब हम अति व्यस्त होते है और जब चाहते है तो हल्का फुल्का कुछ खाते है (स्नैक लेते है) लेकिन समानयत हम लगातार समय के अनुसार भोजन करते है बिना कुछ कम किए क्या परमेश्वर के वचन के प्रति भी हमारी ऐसी इच्छा होती है? नही, हमें अवश्य ही नियमित रूप से परमेश्वर के वचन के द्वारा खाने को योजना बनाना चाहिए, ठीक वैसे जैसे हम प्रतिदिन नियमित रीति से भोजन खाने की योजना बनाते है। जब हमको शारीरिक भोजन नहीं मिलता जिसकी हम को आवश्यकता है, तो हम भूखे हो जाते है। और यदि हम बिना भोजन के लम्बे समय तक रहे, तो यह हमारे अनुभव करने को प्रभावित करता है यह अनुभव करने पर प्रभाव डालता है यहां तक कि मृत्यु का कारण बन सकता है।

आईये दोनों को बराबर समय देते है, ठीक उतना ही महत्व देते है जितना हम परमेश्वर के लिए भूखी हमारी आत्मा को परमेश्वर के वचन से खिलाते है और जैसे हम हमारे भूखे पेट के लिए खाते है। आईये देखते है परमेश्वर के वचन से गहराई तक जाना और परमेश्वर के ज्ञान में से पीना यह उतना ही महत्वपूर्ण है जैसा हम पानी से अपनी प्यास बुझाने के लिए करते है। हां, बराबर महत्व अपनी देह व आत्मा की प्यास बुझाने के लिए "जैसे हिरणी नदी के जल के लिए हांफती है वैसे ही हे परमेश्वर मैं तेरे लिये हांफता हूँ,। (भजन संहिता 42:1) क्या आप अपने आत्मा को खिलाने में भी उतना महत्व देते है

जितना की अपनी देह को? क्या आप की आत्मा की भूख प्यास परमेश्वर व उसके वचन को जानने के लिए है? आईये नियमित रीति से परमेश्वर के वचन का भोजन करते है।

स्मरण करना

ज्ञान को ढूँढने का दूसरा भाग परमेश्वर के वचन को दोहराना/याद करना है। किसने वचन को याद किया है?

प्रयोगात्मक... **प्रयोगात्मक**

2 मिनट

सहयोगियों से कहे कि याद किये हुए वचन को बांटे आशा है, आपको बहुत से लोग मिलेंगे जिन्होंने अपने पंसदीदा वचनों को याद किया हुआ है।

हम क्यों परमेश्वर के वचन स्मरण/याद करते है? क्योकि परमेश्वर इन वचनों के द्वारा हमसे बात करने के योग्य है और हमारे मस्तिष्क में अपनी तरफ से नया शब्द लाते हैं। पवित्र आत्मा सही समय पर हमें वचन याद दिलाता है। जब हम परमेश्वर के वचन से अपने मस्तिष्क को भर लेते है तो यह अवसर है कि यह हमारे हृदयों में भी हो, और व्यवहार के द्वारा भी यह बाहर आता हो।

"परमेश्वर का वचन दोधारी तलवार से भी चोखा व तेज है...। (इब्रानियों 4:12)

प्रत्यक्ष शिक्षा

(एक तलवार पकड़े, यदि आपके पास नहीं है, तो आप ऐसे नाटक करें कि जैसे आप के पास है)

एक महान तलवार चलाने वाले का नाम बतायें जिसे आपने सिनेमा में देखा हो या जिसके विषय किताबों में पढा हो? (भिन्न लोगों को अवसर दे कि उस व्यक्ति व सिनेमा/पिक्चर का नाम सबको बताये: उदाहरण के लिए – ब्रेव हार्ट/लार्ड आफ रिंग्स/ स्टार वार्स वगैहरा.....)

आप क्या सोचते हैं कि ये तलवार बाज कैसे इतने महान बन गए? क्या वो इस प्रतिमा के साथा पैदा हुए थे? नहीं। एक तलवार बाज ज्यादा समय तलवार को चलाने के अभ्यास में बितायेगा ठीक ऐसे जैसे श्वास लेते है। तलवार को सही व प्रभावी रीति से चलना तभी आता है जब हम इसका ज्यादा प्रयोग करते है ठीक जैसे हाथ को बढाना। परमेश्वर का वचन जब हम इसे याद करते है तो यह हमारे बढे हुए (तलवार पकड़े हाथ) हाथ के समान हो जाता है तब हम इस आत्मा की तलवार को कौशल से चला सकते हैं एक सामर्थी हथियार के समान।

उस समय को सबसे बाँटे जब आपने याद किए गए वचन को आत्मिक युद्ध में प्रयोग किया था। कब पवित्र आत्मा आपके द्वारा याद किए गए वचन को आपके मस्तिष्क में ठीक समय पर लाया था? (उदाहण दें: मेरा छोटा बच्चा डर गया था, और सोने नहीं जा

सका था, पवित्र आत्मा फिलिपयों 4:6-7 मेरे मस्तिष्क में लाया जब मैंने इसे अपने छोटे बच्चे के साथ बाँटा, तब वह परमेश्वर की शांति को अनुभव कर पाया और सो गया)

सहयोगियों से कहें कि वो अपना वह अनुभव बाँटे जब याद किए हुए वचन ने किसी के ऊपर प्रभाव डाला था।

प्रयोगात्मक... **प्रयोगात्मक**

2 मिनट

हमें शास्त्र में गहरा अर्थ भी ढूँढना चाहिए। हम स्वयं को शास्त्र में वचनों के ऊपर मंडराने की अनुमति नहीं दे सकते, परन्तु दरअसल हमें परमेश्वर के वचन में गहराई तक जाना अवश्य है। हमारे विक्रय करने में बहुत सारे यन्त्र है, शास्त्र में गहरे अर्थ को खोजने में, हमारी सहायता करने के लिए। सहयोगियों को भिन्न साधन व यन्त्र सबसे बाँटने के लिए कहें जिन्हें वो प्रयोग करते हैं शास्त्र में गहरा अर्थ खोजने के लिए। उदाहरण के लिए (समंजस्य क्षमता शब्दकोष (Concordances)) बाइबल अध्ययन को सम्मिलित करें, कॉमेन्ट्रीज, अधिवेशन सभा, कम्प्यूटर (इंटरनेट साइट्स, www.biblegateway.com) मसीह भाई व बहनों के साथ समूह में वाद विवाद।

2 मिनट

छोटा समूह विचार विमर्श

यदि समय अनुमति देता है, तो छोटे समूह में बंट जाए और शास्त्र में से एक छोटे भाग पर विचार विमर्श करें (कुछ संभव पृष्ठः लूका 10:25-37, लूका 15:11-31, मत्ती 18:21-35) देखें कैसे दूसरों के उदाहरण व अनुभव हम में से प्रत्येक की मदद करते हैं संदर्भ के अर्थ की गहराई में जाने के लिए एक भिन्न व नए तरीके से। जबकि आप समूह में हैं विभिन्न साधन/यन्त्रों को भी बांटें इनको भी उपयोग किया जा सकता है परमेश्वर के वचन में गहराई तक जाने के लिए।

B. हमारी संस्कृति/प्रत्यक्ष शिक्षा

आपके पास अंगूरों का गुच्छा या एक असली मछली या एक नाव, मछली पकड़ने का जाल आपके हाथों में हो जब आप सीखने वालों से बात करते हैं।

प्रभावकारी रीति से संबंधित करना/कहनाः- हमारे लिए केवल शास्त्र को जान लेना ही काफी नहीं है। हमें हमारी संस्कृति को भी अवश्य जानना है और उसको शास्त्र की सच्चाई के साथ संबंधित करने के योग्य होना है, प्रभावी रूप में लोगों के साथ हमारी संस्कृति में। यीशु इसका सिद्ध उदाहरण है, जैसे ही वह अंगुरों के बारी के पास से होकर चला, उसने दाख लता में जुड़े रहने कि विषय बताया। जब वह समुद्र के किनारे चला तो उसने मछली पकड़ने के विषय में बात किया। उसने मछली पकड़ने वालों से जाल व मछली के विषय में बातचीत की, जब उसने किसानों से बातचीत की दाख की बारी व फसल के विषय। यीशु अपने चारों ओर से वाकिफ था और अपने उपदेश में इनको मिला लेता था,

बजाय इसके कि वो कठिन संस्कृति से छिपा रहता, वह बाहर आया कि लोग उसे देखें। उसने अपने आपको अनुमति नहीं दी कि उसके विषय सूचना दी जाए इसके विपरीत उसने अपनी संस्कृति में पारस्परिक प्रक्रिया की। हमें भी वही करना है।

छोटा समूह विचार विमर्श

5 मिनट

यदि समय अनुमति देता है तो छोटे समूह में बंट जाए या इन प्रश्नों को पूरे समूह को दें।

- किस प्रकार से आपकी संस्कृति संकेत कर रही है उन लोगों की ओर जिन तक सुसमाचार नहीं पहुँचा?
- क्या हमारा चर्च संस्कृति से छिप रहा है संस्कृति को प्रभावित कर रहा है?
- वो कुछ प्रभावशाली तरीके कौन से है जिनके द्वारा संस्कृति के साथ पारस्परिक व्यवहार किया जा सके?

छोटा समूह विचार विमर्श

8 मिनट

विचार विमर्श के लिए छोटे-छोटे समूह में बंट जाए। इस बार यह कहकर परिचय करें:- यीशु सब लोगों के लिए था। वह लोगों को नियुक्त कर आनन्दित होता था और संस्कृति से त्यागे/वहिष्कारित लोगों से भी स्वयं को नहीं बचाता था नीचे दी गई सूची में यीशु किसके साथ ज्यादा समय बीताना पसन्द करता था कि उन्हें समाजिक बनाएं।

महसूस लेने वाले

वैश्या

समान्य मजदूर

धार्मिक अगुवे

विचार विमर्श के लिए प्रश्न

- आपके समय का कितना प्रतिशत समय चर्च के लोगों के सात व्यतीत होता है?
- आपके समय का कितना प्रतिशत समय उन लोगों के साथ व्यतीत होता है जिनका यीशु के साथ कोई संबंध/रिश्ता नहीं है?
- क्यों मसीह लोग दूसरे मसीह लोगों के साथ ही सामाजिक होते हैं?
- अगर हम अपना समय केवल उनके साथ बिताएंगे जिनका यीशु के साथ संबंध है तो हम उनके पास कैसे पहुँचेंगे जिनका यीशु के साथ कोई संबंध नहीं है?
- अगर हमने कभी गैर विश्वासियों के साथ समय नहीं बिताया तो हम उस संस्कृति को कैसे जानेंगे जिसमें हम पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं?

- वो क्रियात्मक दूसरे रास्ते/मार्ग क्या है जिनके द्वारा जवानों में समय निवेश कर सकते हैं, उनको जानने के लिए व उनसे सीखने के लिए?

2 मिनट **समाप्ति के विचारः-** किसी ने सुझाव दिया था अगर हम आज समाज से टक्कर लेते हैं तो अवश्य है कि हमारे एक हाथ में बाइबल हो तथा दूसरे में अखबार हो।

जैसे हम लगातार परमेश्वर के वचन छात्र बने रहते हैं, तो वैसे ही हमें लगातार हमारी संस्कृति को सीखने वाला छात्र होना चाहिए तब हम मदद कर सकते हैं परमेश्वर के वचन का संदेश उनको दे सकते हैं जो यीशु को नहीं जानते हैं। हमारे भाग में यह उद्देश्यपूर्ण प्रयास समय लेता है। वो कुछ और मार्ग कौन-से हैं जिनके हाथ हम स्वयं को लगातार चुनौती दे सकते हैं कि हम स्वयं में संस्कृति के जानने की समझदारी को बढ़ाए?

शिक्षक को टिप्पणी

(नीचे दिए गए क्षेत्रों में से प्रत्येक क्षेत्र पर एक या दो सुझाव देने के लिए तैयार रहें)

- पुस्तकें पढ़ना (हाल ही में आपने कौन-सी किताब पढ़ी है?)
- इंटरनेट (आप कौन-सी साइट्स जानते हैं जो मददगार है?)
- अख़बार (आप अख़बार से संस्कृति के विषय में क्या सीखते हैं?)
- पत्रिका (आपकी जवानों की सेवा में कितने छात्र पत्रिका में रूचि रखते हैं?)
- संगीत (किसी कलाकार को किशोर ज्यादा सुनते हैं?)

एक पास्टर, जवान पास्टर, और सहयोगकर्मी हम क्या कर सकते हैं अश्वस्त होने के लिए कि हम उस संस्कृति के विषय में जागरूक हैं जिसमें हमारे जवान बड़े हो रहे हैं? कुछ संभव वेबसाइट समझने के लिए U.S./Canada संस्कृति साथ में www.cpyu.org (सेन्टर फोर पेरेन्ट्स यूथ अंडरस्टैंडिंग, जवानों की संस्कृति के साथ पूर्ण) www.pluggedinonline.com (सिनेमा व संगीत की पुनः झलक) और www.teenresearch.com

हम परमेश्वर के वचन से ज्ञान प्राप्त करते हैं और हमारी संस्कृति के साथ उसका संबंध बनाते हैं। इसको पूरा करने के लिए बुद्धि लगती है।

भाग 3

ज्ञान और संस्कृति को समझना

बुद्धिः प्रभावी होकर अपनी संस्कृति में सेवा करना

2 मिनट

परिचय

कल्पना करें बढ़ई का बेटा होने के नाते हथौड़े को घुमाने के लिए, जब आप पर्याप्त बड़े हैं, व ठोस वस्तु (रोड़ी आदि) उड़ेलने के लिए, छेद करने के लिए, छत बनाने और हर उस चीज को करने के लिए जो एक इमारत या घर को बनाने की समाप्ति पर लगता है, तो आप आँखों में वही बचपन की चमक पाते हैं क्योंकि आप जानते हैं कि कैसे औजारों का उपयोग करते हैं। आपने अपने पिता को बनाते हुए देखा है और आप यह सोचते कि आप यह जानते हैं कि एक घर को बनाने के लिए इन सबकी आवश्यकता है! शायद आपको कुछ ज्ञान हो कि एक घर को बनाने के लिए आपको क्या व किस चीज की जरूरत होगी, लेकिन इस ज्ञान को अभ्यास करने के लिए आपके पास अभी भी बुद्धि की घटी होगी जब वास्तव में एक घर को बनाया जाता है। हो सकता है कि आप यह जानते हो कि कैसे हथौड़े को उपयोग किया जाए, परन्तु आपको यह जानने की जरूरत है कि कैसे यह औजार सहयोग करेंगे पूरे घर को बनाते समय कि ये औजार प्रभावकारी हो।

शास्त्र संबंधी प्रकाश

6 मिनट

बाइबल में, इब्रानी शब्द को अधिकतर प्रयोग किया गया है, बुद्धि के लिए "हाँकमाह" जो बुद्धिमता को दर्शाता है। "हाँकमाह" शब्द का प्रयोग बुनकरों की बुद्धिमता को उल्लेख करता है, समुद्र में जहाज चलाने वाले (समुद्री यात्री) और दूसरे कार्य करने वालों का भी उल्लेख करता है। इन कार्य करने वालों को अपने व्यापार/कार्य क्षेत्र का ज्ञान/जानकारी है, साथ ही साथ इनमें बुद्धिमता (हाँकमाह) भी है अपने क्षेत्र में कार्य कुशलता को दर्शाने के लिए।

इसी प्रकार, हम बाइबल प्रतिदिन पढ़ सकते हैं, और हम याद कर सकते हैं बाइबल के संदर्भों को। हम बाइबल के संबंध में सब कुछ जान सकते हैं। हम याद कर सकते हैं कि किस नियम में कितनी पुस्तकें हैं। हम याद कर सकते हैं कि किस किताब को बाइबल में कहाँ रखा गया है। हम जान सकते हैं कि किस संदर्भ को कहाँ रखा गया है जो लोगों की मदद कर सकता है विभिन्न परिस्थितियों में, लेकिन प्रश्न अभी बरकरार है क्या हमारे पास वो बुद्धि है इस ज्ञान को अपने प्रतिदिन के जीवन में अमल करने के लिए? क्या हमारे पास बुद्धि है कि हम सारे टुकड़ों को साथ-साथ खींच कर निकाल लें?

रोचक संस्कृति

संस्कृति को समझने के लिए, पहली चीजों में से सबसे पहली बात यह है कि हम संस्कृति का अध्ययन करें और देखें कि संस्कृति की अहमियत क्या है?

1. आप क्या समझते हैं कि जिस संस्कृति में आप सेवा करते हैं वो आदरणीय है? प्रयास न कर केवल उन बातों के विषय में सोचें जो बाइबल संबंधी बातों के विरोध में है, क्या वहाँ कुछ बाते हैं जो सकारात्मक है? उदाहरण के लिए, परिवार को सम्मिलित कर सकते हैं, बढ़ोतरी, विकास, पैसा, भौतिक वस्तुएं, विश्वास, कारण और विद्यालय व शैक्षणिकता।
2. चर्च व संस्था जहाँ आप सेवा करते हैं की केंद्रीय अच्छाई क्या है?
3. संस्कृति व सेवा की अहमियत जो आप में है, दोनों में क्या समानताएं है?
4. दोनों में क्या अंतर है?
5. आप संस्कृति को कैसे आकर्षक बनाएंगे, आपसे बाँटे गए गुण/महत्व के द्वारा (वो, हाँ क्यों नहीं, यह शास्त्र के विरोध में नहीं) नए विचारों व बुद्धि प्राप्त करने के लिए कि वर्तमान संदर्भ के बारे में कि आप कैसे सेवा करें?

आपकी संस्कृति में सेवा करने के विषय पर कुछ आधारित सत्य

1. ये बात मायने नहीं रखती कि आप कहाँ रहते हैं व आप क्या करते हैं? ये आसान नहीं होगा, सेवा को आसान होने के लिए नहीं बनाया गया है, सेवा को लोगों के जीवनों को परिवर्तित करने के लिए बनाया गया है जो कभी भी एक आसान काम नहीं है, परन्तु यह एक अच्छा काम है।
2. लोग हमेशा प्रक्रिया में है

   इसलिए, प्रक्रिया जिसका हम उपयोग करते हैं बदल जाती है जैसे ही लोग जिनके साथ हम काम करते हैं, बदल जाते हैं। हमें अपने सेवा करने की तरतीब को जाँचते रहना है अश्वस्त होने के लिए ये तरतीब प्रभावशाली है।
3. बदलाव समय लेता है

   लोगों को समय की जरूरत है बदलने के लिए, संस्कृति समय के साथ बदलेगी, हम कैसे प्रभावशाली तरीके से सेवा करें इसमें भी समय लगेगा, एक पुरानी कहावत है जो बताती है कि जो एक वर्ष में पूरा कर सकते हैं उसे बढ़ा-चढ़ाकर न आंके, और जिसको कोई पाँच वर्ष में पूरा करता है उसे कम न आंके।
4. आप उस संस्कृति के भाग हो जिसमें आप सेवा करते हो। इसलिए यह बुद्धिमानी व दूरदर्शिता है, उस संस्कृति को अध्ययन करना जिसमें आप हैं आपको इसे प्रभावशाली रीति से जानना है इसका अर्थ यह नहीं है कि हम प्रत्येक चीज को गले लगा लें जो भी हमारी संस्कृति में है, परन्तु हम इसका अध्ययन करें ताकि जिनकी हम इस संस्कृति में सेवा करते हैं उन्हें सुसज्जित कर सकें।

5. निजी होना

   सब संस्कृतियों में सर्वश्रेष्ठ क्या है? क्या परमेश्वर है जिसने सब संस्कृतियों को बनाया है? इसमें जश्न करने को है, कहानियाँ है बाँटने के लिए, और समारोह है जिनमें भाग लिया जाए और सेवा की प्रभावी रूप में सक्रियता बढ़ जाएगी जब लोगों के जीवनों में बाँटा जाएगा।

इन वाक्यों को देखें:-

1 कुरिन्थियों 13:1-3 "यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं और प्रेम न रखूँ तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झनझनाती हुई झांझ हूँ, और यदि मैं भविष्यवाणी कर सकूँ, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूँ और मुझे यहाँ तक पूरा विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा दूँ, परन्तु प्रेम न रखूँ तो मैं कुछ भी नहीं, यदि मैं अपनी संपूर्ण संपत्ति कंगालों को खिला दूँ या अपनी देह जलाने के लिए दे दूँ और प्रेम न रखूँ, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं।"

अध्यात्मिकता में कहें, एक व्यक्ति जो बुद्धि हाँकमाह रखता है और हवाला देता है कि परमेश्वर एक है वह परमेश्वर के मार्ग को अनुसरण करने में ज्ञान योग्य और अनुभवी दोनों हैं। बाइबल के बुद्धि के संबंधित लेखों में, बुद्धिमान होने के नाते, परमेश्वर के स्वभाव में रहने की बुद्धिमता के नाते, परमेश्वर की बुद्धि होने के नाते, का मतलब जीवन को संभालने की योग्यता होना परमेश्वर को आदर देते हुए। 1 कुरिन्थियों का लेखक बहुत ज्ञानवान था और बुद्धि रखता था। मनुष्य कई बातों में घमंड कर सकते हैं, अपनी शिक्षा, सामर्थ, और ज्ञान लेकिन प्रेम के बिना जो कुछ उनके पास कहने को है, का अर्थ है कि उनका कहना अर्थहीन है।

मुख्य कारणों में एक जिसके कारण हम यहाँ हैं वह एक दूसरे से ज्ञान को बाँटना व बदल लेना है – एक दूसरे को शिक्षत करना है अगर मैं अपने भाई व बहनों से प्यार नहीं कर सकता, अपने पड़ोसी और अपने शत्रुओं से भी, तब हर चीज जो आज मैंने कहीं व आपसे बाँटी है बेकार है। यह उपयोग नहीं की जा सकती। हाँकमाह में अमल नहीं हो सकती दूसरों को शिक्षा देने में कि मसीह के उदाहरण का अनुसरण करें।

विचार विमर्श

10 मिनट

या तो समूह को छोटे-छोटे समूह में बाँट दे जो विभिन्न सेवा को दर्शाएं या, छोटे-छोटे समूह बना दें, यदि समय हो, तो यह पूरे समूह के विचार विमर्श के लिए हो सकता है।

1. वो कौन लोग है जो आपके समाज में रहते हैं? आपके अनुसार लोगों के औसत की साधारण तस्वीर क्या है?
2. किस प्रकार का बोझ इन व्यक्तियों पर है? उनकी शारीरिक आवश्यकताएं क्या है? उनकी आत्मिक जरूरतें क्या है? उनकी आशा, सपने, इच्छाएं, अभिलाषाएं क्या है?

3. आपके चर्च में सेवा का दर्शन क्या है?
4. अब, कैसे/किस प्रकार पहले तीनों प्रश्न जुड़े हुए हैं? क्या सेवा का दर्शन, इन लोगों के बोझों में इनके साथ होने के लिए, इन लोगों के साथ जुड़ा हुआ है? क्या है उनकी आवश्यकताओं में उनकी मदद कर रहा है? क्या यह उनकी आशा, स्पप्न, और इच्छाओं में दिशा निर्देश कर मदद करता है?
5. आपके प्रसंग में सेवा करने के वो क्या साधन है जिन्हें परमेश्वर ने आपको दिया है?
6. लोगों को शारीरिक व आत्मिक जरूरतों में, उनकी मदद करने में आप कितने प्रभावी है?
7. वो एक क्षेत्र कौन-सा है जिसके ऊपर ध्यान केंद्रित कर सके, कि चर्च दर्शन व आपके समाज में दूरी को मिटाने के लिए एक पुल बनाया जाए?

एक मूर्ख वो है जो सब कुछ जानता है परन्तु कुछ नहीं करता। शायद हमको चुनौती दी जाए बुद्धिमानी से सेवा करने के लिए क्योंकि उस ज्ञान के कारण जो हमारे पास है।

शिक्षा... **शिक्षाः-** संस्कृति का अध्ययन करना क्यों महत्वपूर्ण है?

FULL DAY

6 मिनट

- यह प्रभाव डालता है उनपर जो इनमें है।
- प्रभावशाली संस्कृति अपनी केंद्रीय अहमियत/गुण को उनके ऊपर लाद देती है जो उस संस्कृति में रहते हैं।
- हमारे चर्च व सेवा में वो सामर्थ है जो इसको परिवर्तित कर दे।

तीतुस 1:12 में पौलूस संस्कृति का विश्वास व भाषा का उपयोग करता है सत्य को बताने के लिए "उन्हीं में से एक जन ने, जो उन्हीं का भविष्यद्वक्ता है, कहा है "क्रेती लोग सदा झूठे, दुष्ट पशु, और आलसी पेटू होते हैं।"

समझें प्रेरितों के काम 17:26-29 "उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिए बनाई है और उनके ठहराए हुए समय और निवास की सीमा को इसलिए बाधा है, कि वे परमेश्वर को ढूँढे, कदाचित उसे टटोलकर पा भी जाए तो भी वह हम में से किसी से दूर नहीं, क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते फिरते और स्थिर रहते हैं, जैसा तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, "हम तो उसी के वंशज है।" अतः परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं कि ईश्वरत्व सोने या रूपे या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हो।"

- पौलूस अपनी संस्कृति की गहराई से पूरी तरह से वाकिफ है, अपने कवियों का हवाला देने के लिए उसको पढ़ाना था, और उनको जानना था।
- पौलूस संस्कृति के ज्ञान को इस्तेमाल करता है, सुमसमाचार के सत्य को बताने के लिए वह अपनी बुद्धि का प्रयोग करता है।

- पौलूस संस्कृति में बोली जाने वाली साधारण भाषा व उनके प्रतिदिन की तरतीब का प्रयोग करते हुए बातचीत कर लोगों को आकर्षित करता है।
- पौलूस उस संस्कृति में रहने वाले एक साधारण व्यक्ति के समान बोलना।

विचार विमर्श

या तो छोटे-छोटे समूह में बाँट दें, या पूरे समूह से पूछें:-

- आपको संस्कृति का क्या ज्ञान है सुसमाचार के सत्य को संस्कृति में प्रयोग करने के लिए?
- संगीत की कौन-सी शैली, गतिविधि, पुस्तकें, अख़बार बगैहरा...
- वह साधारण भाषा और तरतीब क्या है जो आपके लिए सबसे अच्छे तरीके से कार्य करेगी?
- क्या लोग आपको एक सदस्य के रूप में, जिस समाज में वो रहते हैं देखते हैं? कैसे?

अंतिम चारित्रिक गुण एक बुद्धिमान व्यक्ति के

2 मिनट

एक बुद्धिमान व्यक्ति...

- सफलता और असफलता को समझता है और उन से सीखता है।
- ज्ञान योग्य को खोजता है।
- संस्कृति के प्रसंग में निष्कपटता से बातचीत करता है।
- बहुतों के लिए परामर्श खोजता है।
- ज्ञान को निजी तौर से प्रयोग करता है, वो कौन है यह उनके कार्यों से प्रगट होता है, और जो कार्य वो करते हैं यही परिणाम है - उनके वह होने का - जो वह है।
- अध्यात्मिक अनुशासनों का अभ्यास करता है।
- जीवन भर सीखने वाला है।

प्रकाश डालने का समय

प्रशिक्षण पर पुनः एक नजर

2 मिनट

वो दो या तीन बातें कौन-सी है जिन्हें याद रखना है।

यदि आपके पास समय है, तो अपने विद्यार्थियों से पूछें यदि कोई प्रश्न है तो।

पार्थना और समाप्ति

पार्थना के लिए कुछ समय लें कि परमेश्वर प्रत्येक को जो यहाँ उपस्थित है बुद्धि प्रदान करें।

विद्यार्थियों के लिए पृष्ठ – बाइबल ज्ञान परीक्षा

सही उत्तर पर गोला लगाएं

1. कौन-सी पुस्तक सैमसन/शमसून की कहानी बताती है?

   A. न्यायियों
   C. 1 शमूएल
   B. सैमसन
   D. यहोशू

2. किन दो पुस्तकों में दस आज्ञाओं की सूची है?

   A. निर्गमन – व्यवस्था विवरण
   C. निर्गमन – लैव्य व्यवस्था
   B. व्यवस्था विवरण – लैव्य व्यवस्था
   D. गिनती – व्यवस्था विवरण

3. कौन-सी पुस्तक बुद्धि की शिक्षा देने के लिए जानी जाती है?

   A. भजन संहिता
   C. नीति वचन
   B. समोपदेशक
   D. श्रेष्ठ गीत

4. किस भविष्द्वक्ता ने यह कहकर परमेश्वर को प्रतिक्रिया दी "मैं यहा हूँ – मुझे भेज"?

   A. यशायाह
   C. आमोस
   B. यर्मियाह
   D. शमूएल

5. कौन-सी पुस्तक बताती है कि यीशु ने विश्वासियों को एक महान आदेश/कार्य सौंपा है?

   A. मत्ती
   C. लूका
   B. मरकुस
   D. यूहन्ना

6. हनन्याह की पत्नी का नाम क्या था?

   A. रिबेका
   C. तबीता
   B. सफीरा
   D. प्रिसकिला

7. पौलूस के साथ उसकी पहली सुसमाचार यात्रा पर कौन गया था?

   A. सीलास
   C. यूहन्ना
   B. बरन बास
   D. लूका

8. वो कौन टापू था, जब पौलूस रोम की और यात्रा कर रहा था तो जहाज टूटने से, वह उस टापू पर पहुँचा था?

   A. मिलिते
   C. पतमुस
   B. क्रेत
   D. मेडागास्कर

9. बाइबल का सबसे बड़ा अध्याय कौन-सा है?

A. भजन संहिता 151
C. यहेजकेल 2
B. यर्मियाह 34
D. भजन संहिता 119

10. इनमें से किसी कि भविष्यवाणी में हम सूखी हड्डियों के विषय में पढ़ते हैं?

A. दानिएल
C. यशायाह
B. यहेजकेल
D. यर्मियाह

11. नए नियम की सबसे छोटी पुस्तक कौन-सी है?

A. 2 यूहन्ना (दूसरी पत्री)
C. यहूदा
B. फिलमोन की पत्री
D. 3 यूहन्ना

12. पुराने नियम में पापों की क्षमा कैसे होती थी?

A. पशुओं के बलिदान से
C. याजकीय प्रार्थना द्वारा
B. धन के द्वारा
D. सुगंधित वस्तुओं द्वारा

13. नूह का व्यवसाय क्या था?

A. किसान
C. चरवाहा
B. बढ़ई
D. समुद्र जीव विज्ञानी

14. कितने समय तक बाढ़ रही (बारिश नहीं, बाढ़)

A. 40 दिन और रात
C. लगभग 1 साल
B. लगभग 2 महीने
D. लगभग 2 साल

15. प्रेरितों के काम 2 अध्याय में पवित्रात्मा आत्मा के विषय/संदर्भ में पुराने नियम के किस भविष्यद्वक्ता का उल्लेख किया गया है?

A. योएल
C. ओबधाह
B. आमोस
D. होशे

बाइबल प्रश्नों के उत्तर

1. कौन-सी पुस्तक सैमसन/शमसून की कहानी बताती है?
   A. न्यायियों
2. किन दो पुस्तकों में दस आज्ञाओं की सूची है?
   A. निर्गमन – व्यवस्था विवरण
3. कौन-सी पुस्तक बुद्धि की शिक्षा देने के लिए जानी जाती है?
   C. नीति वचन
4. किस भविष्द्वक्ता ने यह कहकर परमेश्वर को प्रतिक्रिया दी "मैं यहा हूँ – मुझे भेज"?
   A. यशायाह
5. कौन-सी पुस्तक बताती है कि यीशु ने विश्वासियों को एक महान आदेश/कार्य सौंपा है?
   A. मत्ती
6. हनन्याह की पत्नी का नाम क्या था?
   B. सफीरा
7. पौलूस के साथ उसकी पहली सुसमाचार यात्रा पर कौन गया था?
   B. बरन बास
   C. यूहन्ना
8. वो कौन टापू था, जब पौलूस रोम की और यात्रा कर रहा था तो जहाज टूटने से, वह उस टापू पर पहुँचा था?
   A. मिलिते
9. बाइबल का सबसे बड़ा अध्याय कौन-सा है?
   D. भजन संहिता 119
10. इनमें से किसी कि भविष्यवाणी में हम सूखी हड्डियों के विषय में पढ़ते हैं?
    B. यहेजकेल
11. नए नियम की सबसे छोटी पुस्तक कौन-सी है?
    A. 2 यूहन्ना (दूसरी पत्री)
12. पुराने नियम में पापों की क्षमा कैसे होती थी?
    A. पशुओं के बलिदान से
13. नूह का व्यवस्था क्या था?
    चालाकी का प्रश्नः- बाइबल हमें उसके व्यवसाय के विषय कुछ नहीं बताती, शायद एक शिल्पी...?...?
14. कितने समय तक बाढ़ रही (बारिश नहीं, बाढ़)
    C. लगभग 1 साल
15. प्ररितों के काम 2 अध्याय में पवित्रात्मा आत्मा के विषय/संदर्भ में पुराने नियम के किस भविष्यद्वक्ता का उल्लेख किया गया है?
    A. योएल

छात्रों के लिए – नीति वचन के साथ/द्वारा प्रार्थना करना

नीति वचन में बुद्धि, नीचे दिए गए नीति वचनों के द्वारा प्रार्थना करने में समय बिताएं।

नीति वचन 1:2

...पढ़ने वाला बुद्धि और शिक्षा प्राप्त करें, और समय की बातें समझें...

नीति वचन 1:7

यहोवा भय मानना बुद्धि का मूल है, बुद्धि और शिक्षा को मूढ लोग ही तुच्छ जानते हैं।

नीति वचन 1:20

बुद्धि सड़क में ऊँचे स्वर से बोलती है और चौकों में प्रचार करती है।

नीति वचन 2:2

...बुद्धि की बात ध्यान से सुने, और समझ की बात मन लगाकर सोचें...

नीति वचन 2:6

क्योंकि बुद्धि यहोवा ही देता है, ज्ञान और समझ की बातें उसी के मुंह से निकलती है।

नीति वचन 2:10

क्योंकि बुद्धि तेरे हृदय में प्रवेश करेगी और ज्ञान तुझे सुख देने वाला होगा।

नीति वचन 2:12

ताकि तुझे बुराई के मार्ग से और उलट-फेर की बातों के कहने वालों से बचाएं।

नीति वचन 3:13

क्या दी धन्य है वह मनुष्य जो बुद्धि पाए, और वो मनुष्य जो समझ प्राप्त करे।

नीति वचन 3:19

यहोवा ने पृथ्वी की नींव बुद्धि ही से डाली, और स्वर्ग को समझ के द्वारा स्थिर किया।

नीति वचन 4:5

बुद्धि को प्राप्त कर, समझ को भी प्राप्त कर, उनको भूल न जाना मे मेरी बातों को छोड़ना।

नीति वचन 4:6

बुद्धि को न छोड़, वह तेरी रक्षा करेगी, उससे प्रीति एवं वह तेरा पहला देगी।

नीति वचन 4:7

बुद्धि श्रेष्ठ है इसलिए उसकी प्राप्ति के लिए यत्न कर, जो कुछ तू करे उसे प्राप्त तो कर परन्तु समझ को प्राप्ति का यत्न घटने न पाए।

नीति वचन 4:11

मैंने तुझे बुद्धि का मार्ग बताया है, और सीधाई के पथ पर चलाया है।

नीति वचन 5:1

हे मेरे पुत्र, मेरी बुद्धि की बातों पर ध्यान दे, मेरी समझ की ओर कान लगा।

नीति वचन 7:4

बुद्धि से कह, "तू मेरी बहिन है, और समझ को अपनी साथिन बना।"

नीति वचन 8:1

क्या बुद्धि नहीं पुकारती है, क्या समझ ऊँचे शब्द से नहीं बोलती है।

नीति वचन 8:11

क्योंकि बुद्धि, मूंगे से भी अच्छी है, और सारी मन भावनी वस्तुओं में कोई उसके तुल्य नहीं।

नीति वचन 8:12

मैं जो बुद्धि हूँ, चतुराई में वास करती हूँ और ज्ञान और विवेक को प्राप्त करती हूँ।

नीति वचन 9:1

बुद्धि ने अपना घर बनाया और उसके सातों खंभे गढ़े हुए हैं।

नीति वचन 9:10

यहोवा का भय मानना बुद्धि का आरंभ है, और परम पवित्र ईश्वर को जानना ही समझ है।

नीति वचन 9:12

यदि तू बुद्धिमान हो, तो बुद्धि का फल तू ही भोगेगा और यदि तू ठट्ठा करे, तो दंड केवल तू ही भोगेगा।

नीति वचन 10:13

समझ वालों के वचनों में बुद्धि पाई जाती है, परन्तु निर्बुद्धि की पीठ के लिए कोड़ा है।

नीति वचन 10:23

मूर्ख को महापाप करना हंसी की बात जान पड़ती है, परन्तु समझ वाले पुरूष में बुद्धि रहती है।

नीति वचन 10:31

धर्मी के मुँह से बुद्धि टपकती है, पर उलट-फेर की बात कहने वाले की जीभ काटी जाएगी।

नीति वचन 11:2

जब अभिमान होता है, तब अपमान भी होता है, परन्तु नम्र लोगों में बुद्धि होती है।

नीति वचन 12:8

मनुष्य की बुद्धि के अनुसार उसकी प्रशंसा होती है, परन्तु कुटिल तुच्छ जाना जाता है।

नीति वचन 13:10

रगड़े झगड़े केवल अहंकार ही से होते हैं, परन्तु जो लोग सम्मति मानते हैं, उनके पास बुद्धि रहती है।

नीति वचन 14:6

ठट्ठा करने वाला बुद्धि को ढूँढता है, परन्तु नहीं पाता, परन्तु समझवाले को ज्ञान सहज से मिलता है।

नीति वचन 14:8

चतुर की बुद्धि अपनी चाल का जानना है, परन्तु मूर्खों की मूढता हल करना है।

नीति वचन 14:33

समझ वाले के मन में बुद्धि वास किए रहती है, परन्तु मूर्खों के अन्तःकरण में जो कुछ है वह प्रगट हो जाता है।

नीति वचन 15:33

यहोवा का भय मानने से बुद्धि की शिक्षा प्राप्त होती है और महिमा से पहले नम्रता आती है।

नीति वचन 16:16

बुद्धि की प्राप्ति चोखे सोने से क्या ही उत्तम है, और समझ की प्राप्ति चाँदी से बढ़कर योग्य है।

नीति वचन 17:16

बुद्धि मोल लेने के लिए मूर्ख अपने हाथ में दाम क्यों लिए हैं? वह उसे चाहता ही नहीं।

नीति वचन 17:24

बुद्धि समझ वाले के सामने ही रहती है, परन्तु मूर्ख की आँखें पृथ्वी के दूर-दूर देशों में लगी रहती है।

नीति वचन 18:4

मनुष्य के मुँह के वचन गहिरा जल, और उमड़नेवाली नदी बुद्धि के सोते हैं।

नीति वचन 19:8

जो बुद्धि प्राप्त करता, वह अपने प्राण का प्रेमी ठहरता है, और जो समझ को रखे रहता है उसका कल्याण होता है।

नीति वचन 19:11

जो मनुष्य बुद्धि से चलता है वह विलम्ब से क्रोध करता है और अपराध का भूलना उसे शोभा देता है।

नीति वचन 21:11

जब ठट्ठा करने वाले को दंड दिया जाता है, तब भोला बुद्धिमान हो जाता है, और जब बुद्धिमान को उपदेश दिया जाता है तब वह ज्ञान प्राप्त करता है।

नीति वचन 21:30

यहोवा के विरूद्ध न तो कुछ बुद्धि, और न कुछ समझ, न कोई युक्ति चलती है।

नीति वचन 23:4

धनी होने के लिए परिश्रम न करना अपनी समझ का भरोसा छोड़ना।

नीति वचन 23:9

मूर्ख के सामने न बोलना, नहीं तो वह तेरे बुद्धि के वचनों को तुच्छ जानेगा।

नीति वचन 23:23

सच्चाई को मोल लेना, बेचना नहीं और बुद्धि और शिक्षा और समझ को भी मोल लेना।

नीति वचन 24:3

घर बुद्धि से बनता है और समझ के द्वारा स्थिर होता है।

नीति वचन 24:7

बुद्धि इतने ऊँचे पर है कि मूढ उसे पा नहीं सकता, वह सभा में अपना मुँह खोल नहीं सकता।

नीति वचन 24:14

इसी रीति बुद्धि भी तुझे वैसी ही मीठी लगेगी, यदि तू उसे पा जाए तो अन्त में उसका फल भी भोगेगा।

नीति वचन 28:26

जो अपने ऊपर भरोसा रखता है, वह मूर्ख है, और जो बुद्धि से चलता है, वह बचता है।

नीति वचन 29:3

जो पुरूष बुद्धि से प्रीति रखता है अपने पिता को आनन्दित करता है, परन्तु वेश्याओं की संगति करने वाला धन को उड़ा देता है।

नीति वचन 29:15

छड़ी और डांट से बुद्धि प्राप्त होती है, परन्तु लड़का यूंही छोड़ा जाता है वह माता-पिता की लज्जा का कारण होता है।

नीति वचन 30:3

न मैंने बुद्धि प्राप्त की है, और न परम पवित्र का ज्ञान मुझे मिला है।

नीति वचन 31:26

वह बुद्धि की बात बोलती है, और उसके वचन कृपा की शिक्षा के अनुसार होते हैं।

सभी शास्त्र की व्याख्याएं पवित्र बाइबल में से ली गई हैं, नए अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण (NIV)